Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की नारी का योगदान

डॉ.डौली कुमारी
सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल. ना. मि. वि., दरभंगा
Email- Daulikri2020@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170929
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp. 142-144
September 2025
Submitted: 23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

शोध सारांश

महिलाएं देष में आधी आबादी का नेतृत्व करती है। महिलाओं के योगदान को विस्मृत कर भारतीय इतिहास को लिखा जाना संभव नहीं है। प्रागैतिहासिक काल से महिलाएं पुरूषों का सहयोग करती आ रही हैं। प्रारभ में महिलाओं को अपनी महत्ता का अहसास नहीं थी। किन्तु देष में जब सामाजिक पुनर्जागरण से प्रगतिषील जोड़ पकड़ने लगी तब महिलाओं ने अपनी महत्ता को पहचानना शुरू किया। कई लेखकों ने भी अपने के माध्यम से महिलाओं को यह एहसास दिलाया कि वह साहस तथा शौर्य में पुरूषों के समान है। तथा प्रत्येक वह कार्य करने मे सक्षमह", जिसे पुरूष करते आ रहे हैं। इस सम्बंन्ध में सुभद्रा कुमारी चौहान का कथन प्रासंगिक हैं– खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" विभित्र प्रकार की गुलामियों से मुक्ति हेतु सदियों से प्रयास होते रहे हैं जिनमें महिलाओं ने भी खुल कर पुरूषों का साथ दिया। औपनिवेषिक व्यवस्था के विरोध में भारत में जब स्वाधीनता संग्राम प्रारम्भ हुआ तो उसमें बिहार की महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं की महत्ता के सन्दर्भ में लार्मिटन का कथन है कि "सम्पूर्ण महान कार्य के प्रारम्भ में किसी न किसी स्त्री का हाथ रहा हैं।" भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में मातृत्व शक्ति की भूमिका को कभी नहीं भुलाया जा सकता। जिन्होंने इस भव्य भारत मन्दिर के निर्माण में नींव के पत्थर का कार्य किया।

मुख्य शब्द: *:— सत्यग्रह, मातृषक्ति, स्वाधीनता, आंदोलन, अपील, बहिष्कार, प्रेरणा, आजादी।*

भूमिका :—

गाँधीजी ने अपना प्रथम सत्याग्रह दक्षिण अफ्रीका में शुरू किया था। जहाँ उनके आदर्शों से प्रभावित होकर महिलाओं ने सत्याग्रह में उनका साथ दिया। 1915 ई. में जब गाँधी का भारत आगमन हुआ तो राजकुमार शुल्क ने गाँधी जी का ध्यान बिहार स्थित चम्पारण के नील किसानों की ओर आकृष्ट कराया। नील किसानों के समर्थन में गाँधीजी ने भारत में अपना पहला सत्याग्रह प्रारम्भ किया। गाँधीजी के सत्याग्रह के कारण नील कारण नील किसानों की समस्या का काफी हद तक अंत हुआ। गाँधी जी द्वारा किये गए इस अहिंसर सत्याग्रह के फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा उनकी कुछ मांगों को मान लिये जाने का बिहार की महिलाओं के साथ सम्पूर्ण जनता में सकारात्मक संदेष पहुँचा और उनका मनोबल बढ़ा। क्योंकि प्रथम बार हुआ कि अंग्रेजों ने भारतीयों की बातों को मान लिया था। गाँधीजी ने जब गुजरात के बारदौली में सत्याग्रह किया तो महिलाओं का भी समर्थन मिला। गाँधी जी ने भारत में सत्याग्रह आंदोलन के क्रम में मातृ–षक्ति का आह्वान करते हुए उनके नाम से से एक खुली चिट्ठी लिखी तथा उनसे विदेषी वस्त्र एवं नषीले पदार्थों का बहिष्कार कर उनसे स्वतंत्रता संग्राम में सहायता देने की अपील की। ताकि विदेषी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेषी हस्त–निर्मित वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके। अन्य रचनात्मक कार्यों के साथ महिलाएँ अपना बचा समय लगा कर बहुत सहायता कर सकती थी। गाँधी जी ने कहा कि "विदेषी वस्त्र विक्रेताओं तथा क्रेताओं एवं शराब पीनेवालों एवं बेचनेवालों से उनकी अपील उनका ह्रदय पिघलाए बिना नहीं कर रह सकती थी।" उन्होंने यह भी कहा कि यह असम्भव नहीं कि इस सिलसिले में उन्हें अपमानित किया जाए! किन्तु ऐसा अपमान सहना भी उनके लिए गौरव की बात होगी। किन्तु ऐसी स्थिति आने पर देष की अग्नि परीक्षा जल्दी खत्म होगी।

गाँधी जी के अहिंसक आंदोलन को चम्पारण में देख चुकीं बिहार की महिलाओं पर गाँधी की अपील का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। तथा उन्होंने अपील के अद्देनजर पटना में विदेषी वस्त्रों बहिष्कार किया। पटना में विदेषी वस्त्रों के बहिष्कार की सफलता का श्रेय महिलाओं को दिया जाता है। विंध्यवासनी देवी तथा श्रीमति हसनइ माम के नेतृत्व में अनेक महिलाओं ने पटन में विदेषी वस्त्रों के दुकानों के सामने धरना प्रदर्षन को सफल बनाया। तथा दुकानदारों से विदेषी वस्त्र का व्यपार नहीं करने की अपील की।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.डौली कुमारी, सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल. ना. मि. वि., दरभंगा

How to cite this article:
कुमारी, . डौली . (2025). राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की नारी का योगदान. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 142–144. https://doi.org/10.5281/zenodo.17511471

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17511471
OPEN ACCESS

महिलाओं के क्रांतिकारी रूप को देख कर पटना में पदस्थापित तत्कालीन मजिस्ट्रेट ने महिलाओं से मुकाबला करने हेतु 'महिला पुलिस' नियुक्त करने का सुझाव दिया। यद्यपि यह सुझाव तत्कालीन जिलाधिकारी एवं आयुक्त को व्यवहारिक प्रतीत नहीं हुआ।

महिलाओं का अदम्य साहस नाम आंदोलन के दौरान भी देखने को मिला जब शाहाबाद जिले के श्री राम बहादुर बार–एट–ला की पत्नी ने सहसराम थाने के समक्ष नमक, बना कर नमक कानून का अल्लंघन किया। गाँधी जी के नेतृत्व तथा अपील का प्रभाव सम्पूर्ण बिहार की महिलाओं पर दिखने लगा था। देषबंधु कोष हेतु जब गाँधीजी ने बिहार का भ्रमण किया तो महिलाओं ने अपने आभूषण तक दान में दे हिए। देषबन्धु कोष के कार्य में गाँधीजी को जयप्रकाष नारायण की पत्नी प्रभावती देवी का महत्वपूर्ण सहयोग मिला। महिलाओं में जागरण के सन्दर्भ में जनवरी, 1929 मील का पत्थर सिद्ध हुआ। जब पटन में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का अधिवेषन हुआ। इस अधिवेषन में बिहार की महिलाओं को देष के विभिन्न भागो से आई महिलाओं से मिलने, उनके विचारों को जानने तथा महिला समाज में व्याप्त सीमाओं को दूर करने के तरीकों पर विचार करने के साथ देष की स्वतंत्रता हेतु सार्थक पहल पर आपसी संवाद किया। बिहार में सम्मेलन की एक शाखा की नींव रखी गई। जिसका एक अधिवेषन 17 दिसम्बर, 1929 को हुआ। जिसमें शारदा एक्ट के समर्थन तथा पर्दा प्रथा एवं दहेज प्रथा जैसी बुराईयों के विरोध में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। बिहार की अनेक महिलाओं ने इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी उन्होंने अपने कार्यों से न सिर्फ स्त्री वर्ग को जागृत करने का प्रयास किया बल्कि अपने प्राणों की चिन्ता न कर स्वतन्त्रता आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा किया। इन साहसी महिलाओं में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की बहन भगवती देवी, उनकी पत्नी राजवंषी देवी, जयप्रकाष नारायण की पत्नी श्रीमति प्रभावती देवी, श्रीमति विन्धयवासिनी देवी, श्रीमति, हसनइ माम, श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, लाल बहादुर शास्त्री की बहन एवं शंभु शरण वर्मा की पत्नी श्रीमति सुन्दरी देवी, श्रीमति सरस्वती देवी, श्रीमति प्रियवंदा देवी तथा श्रीमती भवानी मल्होत्रा आदि नाम प्रमुख हैं।

1857 की क्रांन्ति को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है। जिसमें बिहार के बाबू कुंवर सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाबू कुंबर सिंह ने जब अंग्रेजों के विरूद्ध सेना का नेतृत्व किया तो इस संग्राम में गुप्त रूप में कई महिलाओं ने कुंवर सिंह की सहायता की। जिनमें आरा क्षेत्र की करमन बाई, धरमन बाई तथा नर्तकी गुलाबी आदि प्रमुख हैं। नर्तकी, गुलाबी कुंवर सिंह को बचाने के प्रयास शहीद हो गयी। जिसकी स्मृति में कुंवर सिंह ने आरा में एक मस्जिद का निर्माण करवाया।

गाँधी महिलाओं की शक्ति को पहचानते थे। इसे वे दक्षिण अफ्रीका में देख भी चुके थे। अतः पहली बार 1917 ई. में प्रथम बार बिहार आगमन पर उन्होंने सभी लोगों से स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने की अपील की। गाँधीजी का मानना था कि स्वराज्य की विजय में देष की स्त्रियों का उतना ही हिस्सा होना चाहिए जितना पुरूषों का। शुद्ध भावना से स्त्रियों कार्य कर पहाड़ों को भी हिला दे सकती हैं। तथा आंदोलन के दौरान जब पुरूष जेल जायेगे तो महिलाएँ उनके कार्यों को सम्पादित कर सकेंगी। साथ ही लोगों को समझाने–बुझाने का कार्य पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं कुषलतापूर्वक कर सकती हैं, क्योंकि उनमें अहिंसा की प्रवृति अधिक है। गाँधीजी ने जब आंदोलन को अहिंसात्मक रूप दिया तो महिलाओं ने इनमें अच्छी भागीदारी निभायी। मातृषक्ति निर्भीकता पूर्वक हर प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेतीं, राष्ट्रीय नेताओं के आगमन पर सभा, सम्मेलनों में उनका साथ देती तथा उनके अपील पर लड़ाई के मैदान में कूद पड़ने के लिए हर समय तैयार रहती थीं।

गाँधी जी महिलाओं की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। अतः उन्होंने महिलाओं के नाम मतदाता सूची मे दर्ज कराने, उन्हें व्यवहारिक षिक्षा देने, उन्हें जात–पात के जंजीरों से छुड़ाने तथा मातृषक्ति को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। बिहार की महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय से ही शुरू हो गयी थी। किन्तु महिलाओं का अनुपात प्रारंभिक अवस्था में न्यूनतम था। अर्थात वे राजनीति में कोई महत्वपूर्ण सक्रिय योगदान नहीं करती थीं। यद्यपि 1889 में बिहार क्षेत्र से स्वराज्य कुमारी देवी तथा कादम्बिनी गांगुली के साथ 10 महिलाओं ने बम्बई कांग्रेस में भाग लिया था।

गाँधी जी के व्यक्तित्व तथा अहिंसक आंदोलन से प्रभावित बिहार की महिलाओं ने अथक प्रयास किए। जिनमें सरला देवी चौधरी प्रमुख थीं। उन्होंने न सिर्फ कांग्रेस संगठन हेतु कार्य किया बल्कि 1921 ई. में ब्रिटिष राजकुमार के भारत आगमन के क्रम में किए जानेवाला स्वागत समारोहों का विरोध भी किया। फलतः ब्रिटिष राजकुमार के पटना आगमन पर शहर में हड़ताल रखा गया। राजकुमार के भारत आगमन के विरोधस्वरूप कई वकील कचहरी नहीं गए। जो महिलाएं देष की एकता तथ अंग्रेजी सत्ता के महत्त्व को समझती थीं वे अन्य महिलाओं को जागरूक करने का कार्य करती थीं। ऐसी महिलाओं में सावित्री देवी तथा उर्मिला देवी प्रमुख थीं। सावित्री देवी का तीन महीने कैद में भी बिताने पड़े थे। बिहार की महिलाओं ने विभिन्न संगठन में भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई तथा महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित भी किया। बिहार प्रान्तीय कांग्रेस की कोषाध्यक्ष तथा कौमी सेना दल की अध्यक्ष भागलपुर क्षेत्र की लीला सिंह ने प्राप्त की महिलाओं को कांग्रेस के सांगठनिक कार्यों से जोड़ने का प्रयास किया। फलतः कांग्रेस के अहमदाबाद सम्मेलन में बिहार की श्रीमती लाला दौलत राम, हरमति देवी, जानकी देवी, गुलाबो देवी तथा लीला सिंह जैसी साहसी महिलाओं ने भाग लिया। कांग्रेस संगठन हेतु कार्य करने के लिए श्रीमती कृष्णा कुमारी देवी ने विभिन्न स्थानों का दौरा किया। ताकि संगठन को मजबूत किया जा सके। इन स्थानों में बाढ़ तथा बेगूसराय आदि प्रमुख हैं। आजादी की लड़ाई में हिन्दू–मुस्लिम परिवार की महिलाएँ, शहरी ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं सभी आगे बढ़ कर अंग्रेजों के विरूद्ध कार्यक्रमों में भाग ले रही थी।

भारत में जब सहयोग आंदोलन प्रारंभ हुआ तो इसमें बिहार प्रदेष के लोगों ने भी आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। असहयोग आंदोलन में बिहार की महिलाएं यथा श्रीमति सुनीति देवी, श्रीमती रामसखी देवी घटारों, श्रीमती विन्दा देवी, श्रीमती सीता देवी तथा श्रीमती सत्यभाषा देवी ने घर से निकर कर पुरूषों के साथ आंदोलन में सक्रियता दिखाई। कुछ महिलाओं को आंदोलन के दौरान जेल भी जाना पड़ा। उन महिलाओं के जेल से वापस आने पर गांधीजी ने स्वयं आकर उनसे मुलाकात की थी ।कांग्रेस में कार्य करनेवाली महिलाओं में श्रीमती विन्धवासिनी देवी, माधुरी देवी तथा उर्मिला देवी प्रमुख नाम हैं। विन्ध्यवासिनी देवी गया कांग्रेस में स्वयंसेविका दल संगठित कर अपनी दक्षता का परिचय देते हुए नेतृत्व किया था। कुछ महिलाएं अपने पतियों के साथ कांग्रेस के अधिवेषन में जाती रही, जैसे–श्रीमती रामझरी देवी ने अपने पति महेन्द्र सिंह साथ्ज्ञ 1926 के गौहाटी अधिवेषन, 1929 के लाहौर कांग्रेस, 1931 के करांची अधिवेषन तथा 1934 के बम्बई सम्मेलन में भाग लिया था एवं दीप नारायण सिंह की पत्नी लीला सिंह अपने पति के साथ सक्रिय योगदान दे रही थीं।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

कांग्रेस के अधिवेषनों में भाग लेने से बिहार की महिलाओं का देष के अन्य भागों में रहने वाली महिलाओं से मिलने, उनके विचारों को जानने तथा समाज में प्रचलित कुप्रथाओं को दूर करने के सम्बंध में विचार–विमर्ष हुआ। फलतः उन्होंने शारदा एक्ट का समर्थन तथा दहेज प्रथा का विरोध किया। महिलाओं द्वारा इस प्रकार विभित्र संगठनों तथा सम्मेलनों में भाग लेने से आजादी के संघार्ष में तीव्रता आयी तथा कांग्रेस का आधार भी अधिक मजबूत होने लगा। इस संदर्भ में श्रीमती चन्द्रावती देवी का नाम उल्लेखनीय है जिन्हें बेतिया में स्थानीय कांग्रेस कमिटि का उपसभापति चुना गया।

वर्ष 1930 में जब गांधीजी को गिरफ्तार किया गया तो इस घटना का विरोध लगभग समूचे भारत में हुआ। बिहार में भी गांधीजी की गिरफ्तारी का व्यापक असर पड़ा। बिहार प्रदेष कांग्रेस कमिटि के आवाहन पर बिहार में जगह–जगह विदेषी वस्त्रों तथा शराब की दुकानों पर धरना दिया। विदेषी वस्त्र के विरोध तथा शराब की दुकानों के समक्ष धरने में बिहार के महिलाओं की अग्रणी भूमिका रही। बिहार में सभाओं के आयोजन तथा हड़ताल के साथ–साथ अदालती कार्यों का भी बहिष्कार किया गया।

निष्कर्ष :–

बिहार में स्वतंत्रता संघर्ष का लम्बा इतिहास रहा है। औपनिवेषिक सत्ता के विरूद्ध जब भी आवाज बुलंद हुई तो बिहार के लोग अग्रपी पंक्ति के खड़े हुए। किन्तु यह पंक्ति तब और सषक्त हो गई, जब इनमें मातृषक्ति की सक्रिय भूमिका हो गई। बिहार का यह सौभाग्य था कि गांधीजी ने भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह बिहार प्रान्त की भूमि पर किया। गांधीजी का यह सत्याग्रह महिलाओं हेतु प्रेरास्रोत बना। और इस प्रेरणा को और बल मिला जब भारत में गांधीवादी आंदोलन विभित्र मुद्दों को लेकर आगे बढ़ा। अंग्रेजों का विरोध जैसे–जैसे बढ़ता गया वैसे–वैसे देष की आजादी के लिए महिलाओं का साहस भी बढ़ता गया। फलतः देष को आजाद होने तक महिलाएँ इस मोर्च पर डटी रही और अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ जिसमें बिहार के महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही ।

संदर्भ सूची :–

1- कुमार अमरेन्द्र, :– स्वाधीनता संग्राम में बिहार की महिलाएं, हिन्दुस्तान, दिनांक 15–08–1997, पृ.17
2- वही पृ. 23
3- वही पृ. 28
4- बिहार की महिलाएं, :– स. षिवपूजन सहाय, पृ.–332
5- वही पृ. 204
6- वर्णवाला, महेष कुमार, :– भारती डॉ . श्याम मूर्ति, बिहार एक समग्र अध्ययन (2019), कॉसमॉस पब्लिकेषन, दिल्ली
7- दत्त, के. के., बिहार में स्वातंन्त्र आंदोलन का इतिहास, खण्ड–3 पृ. 33
8- वही पृ. 48
9- झा, दिगम्बर (प्र.सं.) :– 1971, बिहार का खादी आंदोलन और उसका विकास, पृ. 32
10- सलोना श्याम, :– बिहार समग्र, केबीसी नैनो पब्लिकेषन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृ. 25